Part I HISTORY

सिन्धु घाटी की नगर योजना

सिन्धु घाटी सभ्यता की नगर योजना ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता थी। जालनुमा सड़के व गलियाँ सुनियोजित जल-निकास प्रणाली व पक्की ईंटो का प्रयोग आदि कई विशेषतायें इस सभ्यता को विशिष्ट बनाती है। मोहनजोदड़ो में पाये गये अवशेषों को देखकर ही 'मैके' ने कहा है कि इन अवशेषों को देखकर व्यक्ति यह अनुभव करता है कि वे लंकाशायर के किसी आधुनिक नगर के अवशेष है

सिन्धु घाटी सभ्यता का नगर निर्माण —

सिन्धु सभ्यता में हुये उत्खननों पर जब हम रोशनी डालते है तो यह निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि सिन्धुनिवासी महान निर्माणकर्ता थे उन्होंने नगर नियोजन करके नगरों में सार्वजनिक तथा निजि-गृह रक्षा-प्राचीर, सार्वजनिक जलाशय, सुनियोजित मार्ग व्यवस्था तथा सुन्दर नालियों का प्रावधान किया। सिन्धु-घाटी सभ्यता के

अधिकांश नगर नदी के मुहाने पर अवस्थित थे। इन नदियों से नगर की सुरक्षा करने के लिए बांधों का निर्माण भी किया गया था। नगरों में चौड़ी-चौड़ी सड़कें पूरब से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर थी जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। सड़कों के किनारे नालियां होती थी। प्रत्येक गली में एक छोटी नाली होती थी जो सड़क की नाली से मिलती थी। पक्की नालियों को बनाने के लिए में पत्थरों, ईंटो तथा चूने का प्रयोग किया जाता था। इन नालियों के थोड़ी दूरी पर शोषक कुएं भी थे ताकि कुड़े से पानी का बहाव न रोक सके। नालि की सफाई व्यवस्था को देखकर वाशव का विचार है कि वहां किसी नागरिक सरकार की अवश्य देखरेख रही होगी

सिन्धु-घाटी का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष था इन नगरों के स्थापत्य में पक्की सुन्दर ईंटों का प्रयोग। ईंटो की ऐसी चुनाई की विधि विकसित कर ली थी जो किसी भी मापदंड के अनुसा वैज्ञानिक थी और आधुनिक इंग्लिश

से मिलती जुलती थी। मकानों की दीवारों की चुनाई के समय ईंटों को पहले लम्बाई के आधार पर पुनः चौड़ाई के आधार पर जोड़ा जाता था। चुनाई की इसी पद्धति को इंग्लिश बांड कहा जाता है।

साधारण भवन :- साधारण भवन बड़े भी होते थे और पक्के मकान भी। खुदाई में कुछ भवन ऐसे मिले है जिसमें मात्र दो कमरे है मकान एक से अधिक मंजिले के होते थे। उपर के मंजिल पर जाने के लिए पत्थरों एवं ईंटों की सीढ़ीया होती थी। मकान में दरवाजे गली में खुलते थे। मुख्य सड़क की तरफ दरवाजे और खिड़कियाँ नही होने के कारण संभवतः धूल को मकान में आने से रोकना था। मोहनजोदड़ो में कुछ घरों में कुएँ भी मिले है। किन्तु हड़प्पा में एक भी कुआँ नही मिलता है। स्नानागार सुन्दर ढंग से बनाए जाते थे उनका फर्श पक्की ईंटो से कुशलतापूर्वक बनाया जाता था। स्नानगृहों व रसोईघरों से

पानी निकलने के लिए नालियां होती थी। जो बस्तियों की नालियों में मिलती थी।

सार्वजनिक व राजकीय भवन :- सिन्धु घाटी सभ्यता के उत्खनन में राजकीय तथा सार्वजनिक भवन प्रकाश में आये है। मोहनजोदड़ो में एक विशाल भवन का अवशेष प्राप्त हुआ है जो लगभग 70 मी० ल० तथा 24 मी० चौड़ा था। इस विशाल भवन में अनेक कमरे, भण्डागार और दो आंगन थे। मोहनजोदड़ो में एक गढ़ था जिसका निर्माण कृत्रिम पहाड़ी पर किया गया था। नदी की बाढ़ से रक्षा करने के लिए इसके चारो ओर ऊंचा बांध था। इसमें अनेक मीनारे थी। गढ़ में एक विशाल भवन था। इसमें अनेक चौकिया बनी हुई थी जो संभवतः विचार-विनमय के लिए इस्तेमाल किया जाता होगा।

अन्न-भण्डार गृह — हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में कुछ अन्य विशाल भवन मिले है जिसे पुरातत्ववेत्ता अन्न भण्डार गृह मानते है

हड़प्पा में राजमार्ग के दोनों ओर 1.25 मी० ऊँचे चबूतरों पर छह-छह की दो पंक्तियों में विशाल अन्न भण्डार बने थे। मोहनजोदड़ो में सार्वजनिक भोजनालयों के अवशेष भी प्राप्त हुये हैं।

सार्वजनिक स्नानगार — मोहनजोदड़ो के उत्खनन में एक विशाल स्नानगार भी मिला है। इस स्नानागार का भवन अत्याधिक भव्य है। इसके कारण 'कार्बैटन' ने इसकी तुलना समुद्र किनारे किसी आधुनिक होटल से की है। यह भवन बाहर से 180 फुट लम्बा व 180 फुट चौड़ा है। जलाशय आयताकार 180 फुट चौड़ा तथा 8 फुट ~~थी~~ तथा 39 फुट चौड़ा तथा ओर जल तक गहरा था। इसमें प्रत्येक ओर जल तक सीढ़ियां भी पहुंचने के लिए ईटों की पायी गयी है। ~~इसमें प्रत्येक ओर जल~~ फर्श और दीवारों ~~तक पहुंचने के~~ को ईटों से जिप्सम से जोड़ा गया है। स्नानकुण्ड से पानी को बाहर निकालने की भी समुचित व्यवस्था की गयी थी जलाशय के भवन में पहुंचने के लिए छह रास्ते थे। जलाशय के चारो ओर

बरामदे तथा इसके पीछे अनेक कमरे थे। सम्भवत: वे छोटे स्नानगार थे क्योंकि इसमें से पानी के निकास हेतु नाली बनी हुई है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि सम्भवत: इन कमरों में पानी गर्म करने की व्यवस्था थी किन्तु 'मैके' के अनुसार यह स्थान पुरोहितों के स्नान करने के लिए था जबकि मुख्य जलाशय सार्वजनिक प्रयोग के लिए था। इतिहासकारों का अनुमान है कि जलाशय सम्भवत: धार्मिक महत्व रखता था और पवित्र पर्वों पर लोग स्नान करते थे।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि सिन्धु घाटी सभ्यता का नगर विन्यास अत्यन्त उन्नत था और इसके पीछे कार्य करने वाले अभियन्ता उच्च कोटि के तकनीक का इस्तेमाल करते थे इसी का परिणाम है कि लगभग 5000 वर्षों के बाद भी आज भी उसका अस्तित्व आज भी विद्यमान है।

Scanned with CamScanner